गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 7

सब कुछ उसी से है। वह सिर है– कुलुस्सियों 2

कलीसिया का प्रभु होकर भी मसीह यीशु कलीसिया में अगुवे रखता है– 1 तीमुथियुस 3 में उनका विवरण दिया गया है। पहले, प्राचीन अर्थात अगुवे। सेवक अर्थात कलीसिया में सेवकों की अगुआई करनेवाले। धर्मशास्त्र में इन सबका स्पष्ट वर्णन नहीं है परन्तु कुछ आवश्यक तथ्य हैं जिनकी पुष्टि हमें कलीसिया में करना आवश्यक है।

प्राचीनः कलीसिया के अगुवे

कलीसिया उन्हें चुनती है, उनका अनुसरण करती है। वे मसीह के दूतकार्य को पूरा करने के लिए पूरे मन से समर्पित हैं। आपके मन में अपनी पृष्ठभूमि के आधार पर प्राचीनों और सेवकों के भिन्न भिन्न चित्र उभर रहे होंगे। धर्मशास्त्र क्या कहता है?

प्राचीनः यह एक बाइबल आधारित शब्द है– पुराने नियम और नये नियम दोनों में इसकी अभिव्यक्ति है। प्रेरितों के काम की पुस्तक और पत्रियों ही में यह 20 बार प्रकट हुआ है।

प्रेरितों के काम 20:28–31, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा–बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।"

1 तीमुथियुस 3:1–7, "यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, वह भले काम की इच्छा करता है। यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि–सत्कार

करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो। पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो। अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और अपने बाल–बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो। जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा? फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए। और बाहरवालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए।"

तीतुस 1:5–9, "मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे। जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों, जिन के बच्चे विश्वासी हों, और उनमें लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो। क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी हो, पर अतिथि सत्कार करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो; और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके और विरोधियों का मुंह भी बन्द कर सके।"

1 पतरस 5:1–4, "तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच–कमाई के लिये नहीं पर मन लगा कर। जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुंड के लिये आदर्श बनो। जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा जो मुरझाने का नहीं।"

नये नियम में प्राचीन शब्द हर जगह बहुवचन में है। इसका कुछ तो अर्थ है।

प्राचीनों के चार कार्यभार...

वे मसीह के अधिकार के अधीन अगुआई करते हैं और कलीसिया के अंग हैं।

मत्ती 18:15–17, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाए।' यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जान।"

यहां कलीसिया लेखादायी है। पवित्र आत्मा उन्हें चुनता है। प्राचीन कलीसिया के हैं और कलीसिया मसीह यीशु की है। अतः प्राचीन परमेश्वर के पुत्र के प्रति उत्तरदायी हैं। प्रेरितों के काम 20:28, "इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।"

वे मसीह के अधिकाराधीन अगुआई करते हैं और वे मसीह की देह की सुधि लेते हैं। प्राचीन झुण्ड की रखवाली करते हैं। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वे झुण्ड का पोषण करते हैं उनकी पीठ ही नहीं सहलाते। वे परमेश्वर का वचन सिखाते हैं। अतः उन्हें शिक्षा देने में निपुण होना है। (1 तीमुथियुस 3:2) उन्हें वचन का व्यापक ज्ञान होना है और वचन की शिक्षा में दक्ष होता है। 1 तीमुथियुस 5:17, "जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं।"

वे मसीह के अधिकार से अगुआई करते हैं। वे मसीह की देह की सुधि लेते हैं, वचन की शिक्षा देते हैं और प्राचीन मसीह के चरित्र का उदाहरण बनते हैं। 1 तीमुथियुस 3, 1 पतरस 5, और तीतुस 1 में प्राचीनों के गुण व्यक्त हैं। उनकी न तो आयु सीमा है और न ही सांसारिक उपलब्धि है। उनमें स्त्रियां नहीं हैं। यह बराबरी या योग्यता का विवाद नहीं है। यह परमेश्वर की व्यवस्था है जैसे इफिसियों 5 में घर का प्रधान पुरुष है। आत्मिक परिवार का सिर, प्राचीन भी पुरुष ही है।

अब कलीसिया प्राचीन की नकल करे तो क्या होगा? वह एक आदर्श है। क्या उसमें आत्मसंयम है? क्या वह बुद्धिमान है? क्या वह शान्तिदाता है? क्या वह सज्जन है? क्या वह आत्मत्याग से देता है? क्या वह दीन जन है? सहनशील है? सत्यनिष्ठ है? क्या उसका जीवन अनुशासित है? अपने परिवार में क्या वह मुख्य भूमिका निभाता है? अपने परिवार का प्रबन्ध कर पाए तो वह कलीसिया का प्रबन्ध कैसे करेगा? यदि

वह अविवाहित है तो उसमें आत्मसंयम है? यदि विवाहित है तो क्या अपनी पत्नी के प्रति पूर्णतः समर्पित है? क्या उसकी सन्तान उसका सम्मान करती है? यह गंभीर प्रश्न हैं।

अब उसका सामाजिक जीवन। क्या दयालु है? क्या वह सेवाभाव रखता है? प्राचीन स्वार्थी नहीं हो सकता है। क्या वह परदेशियों का मित्र है? क्या वह पक्षपात करता है? क्या उसकी प्रतिष्ठा निर्दोष है? 1 तीमुथियुस में उसे सिद्ध तो नहीं निन्दा से रहित कहा गया है। क्या वह अपने आत्मिक जीवन में अन्यजातियों से शिष्य बनाता है? यह मुख्य बात है। यदि वह स्वयं नहीं करेगा तो कलीसिया से कैसे अपेक्षा करेगा कि वह शिष्य बनाए? क्या वह वचन का प्रेमी है? क्या वह प्रार्थनाशील है? क्या उसका जीवन पवित्र है? क्या वह अनुग्रहकारी है? यह दीनता के प्रश्नों की सूची है।

सेवकः कलीसिया के अगुवे

कलीसिया सेवकों को अगुआई के सेवक मानक सम्मान देती है कि वे मसीह की देह के निर्माण में अपने वरदान काम में लें।

प्रेरितों के काम 6:1–7, "उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।" यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, और प्रखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन और परमिनास और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया। इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे। परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया।"

1 तीमुथियुस 3:8–13, "वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के लोभी न हों; पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहले परखे जाएं, तब यदि

निर्दोष निकलें तो सेवक का काम करें। इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए; दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हों। सेवक एक ही पत्नी के पति हों और बाल–बच्चों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिये अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस प्राप्त करते हैं।"

सेवकों के तीन कार्यभार...

तीमुथियुस की पत्री का यह अंश सेवकों के तीन कार्यभार प्रकट करता है। पहला, वचन के अनुसार वे आवश्यकता पूर्ति करते हैं। प्रेरितों के काम 6 में विधवाओं और सदस्यों की सेवा का प्रश्न उठता है। विशेष परिस्थितियों में उन्हें विशेष आज्ञाएं मानना है। परमेश्वर की आज्ञा थी कि वे ऐसा करें। अतः उन्हें इसकी व्यवस्था करना थी।

सेवक वचन की सेवा में योगदान देते हैं। यहां सेवक प्राचीनों की सेवा करते हैं कि वे अगुआई में सफल हों। प्रेरितों के काम अध्याय 6 में सेवक कार्यभार संभालते है। तो प्रेरित प्रार्थना और वचन के प्रचार में ध्यान लगा सकते हैं। सेवक प्राचीनों की सहायता करते हैं कि वे अगुआई कर पाएं। सेवक कलीसिया की अगुआई करते हैं कि वह सेवा कर पाए। कलीसिया में हर कोई सेवक नहीं कहलाएगा। क्योंकि उन्हें सेवक होना है परन्तु जो सेवा में विभिन्न भूमिकाएं निभाते हैं वे सेवक कहलाते हैं।

सेवक संसार में मसीह की देह को एकता में लाते हैं। प्रेरितों के काम 6 में एकता का संघर्ष चल रहा था। सेवक एकता लाते हैं विभाजन नहीं।

सेवक की योग्यताएंः एक, दूतकार्य की मानसिकता। प्रेरितों के काम 6 में यही प्रकट है। कलीसिया के दूतकार्य का दर्शन और कलीसिया के दूतकार्य में सेवा तथा मसीह का चरित्र–चित्रण। प्रेरितों के काम 7 में स्तिफनुस, एक सेवक मसीही शहीद है।

प्रेरितों के काम 7:54–60, "ये बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे। परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, "देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं।" तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर

झपटे; और उसे नगर के बाहर निकालकर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पांवों के पास उतार कर रख दिए। वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर सो गया।"

उसके विषय कुछ प्रश्न– 1 तीमुथियुस 3– क्या वह माननीय है? क्या वह सच्चा है? निष्ठावान है? क्या संयमी है? क्या वह आत्मत्याग से देता है? क्या वह वचन के प्रति समर्पित है? क्या वह विश्वासयोग्य है? उसे निर्दोष भी होना है अर्थात नैतिकता में शुद्ध। सिद्ध तो नहीं पर निन्दा से परे। क्या वह अपने परिवार में मसीह की प्रतिष्ठा करता है।

अब स्त्रियों के विषयः हमने देखा है कि प्राचीन पुरुष ही थे। सेवकों के विषय दो विचार हैं। एक विचार से तो स्त्रियां भी सेवकों में हैं। दूसरे विचार से "नहीं।" 1 तीमुथियुस 3 में लिखा है कि उन्हें सम्मानित होना है और उनकी बातें दो अर्थ की न हों। और पद 11 में उनकी पत्नियों के लिए लिखा है कि वे भी सम्मानित हों, निन्दक न हों, सेवाभाव की हों तथा हर बात में विश्वासयोग्य हों। सेवक की एक ही पत्नी हो।

चार बातें संकेत देती हैं कि स्त्रियां सेवक हो सकती हैं। पद 11 के आधार पर अनेक विचारकों का मानना है कि ये स्त्रियां सेवक थीं।

प्राचीनों की पत्नियों के विषय में वह कुछ नहीं कहता है जबकि उनका उत्तरदायित्व और भी अधिक है चाहे घर में या कलीसिया में। अब फीबे पर ध्यान दें। रोमियों 16:1, "मैं तुम से फीबे के लिये जो हमारी बहिन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूं।"

यह एक सेविका का संकेत है।

मेरे विचार में एक महत्वपूर्ण बात है। कुछ कलीसियाओं में सेवक प्राचीनों की भूमिका निभाते हैं। यदि ऐसा है तो मैं कहूंगा कि स्त्रियों को सेविका होना चाहिए परन्तु जब अतिथि सत्कार का विषय आता है तो पौलुस 17 स्त्रियों का उल्लेख करता है जो कलीसिया में विभिन्न सेवाएं कर रही थीं। यदि हम प्राचीनों और सेवकों की भूमिकाओं को भली भांति समझें तो मेरे विचार में स्त्रियों का सेविका होना संभव है।

यह सब कैसे संभव हो।

कलीसिया का प्रत्येक सदस्य सुसमाचार का सेवक है। इफिसियों अध्याय 4 में यह स्पष्ट व्यक्त है।

इफिसियों 4:11–16, "उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वकता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाए, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए। जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाए और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जाएं। ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं, जिससे सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक–ठाक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।"

अगुवे कलीसिया की सेवा करते हैं।

कलीसिया का प्रत्येक सदस्य सेवक है और अगुवे सदस्यों की सेवा करते हैं।

इब्रानियों 13:7–8, "जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल–चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो। यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक–सा है।"

मत्ती 23:10–12, "और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगाः और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

मरकुस 9:35, "तब उसने बैठकर बारहों को बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सब से छोटा और सब का सेवक बने।"

मरकुस 10:45, "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे।"

प्रभु यीशु ने स्वयं सेवा की और कलीसिया के अगुओं को दास होने की आज्ञा दी। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आज प्राचीनों के अधिकार शर्तों पर आधारित होते हैं। 1 तीमुथियुस 5:17 में लिखा है, "जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं।"

यदि मैं वचन की शिक्षा नहीं देता हूं तो मैं कलीसिया की अगुआई नहीं कर सकता क्योंकि कलीसिया के मार्गदर्शन का एकमात्र साधन वचन ही है। अतः प्राचीनों के लिए अनिवार्य है कि वे वचन की उचित शिक्षा दें और उसका जीवन में आचरण रखें। 1 कुरिन्थियों 11:1 में पौलुस कहता है, मेरी नकल करो जैसे मैं मसीह की नकल करता हूं। यह उत्तरदायित्व शर्त आधारित है और गंभीर है। प्राचीन अगुओं की और कलीसिया की सेवा में अत्यधिक सतर्क रहें। वे निगरानी करें और उत्तरदायित्व के साथ सेवा करें जैसे कि उन्हें लेखा देना है। वे सहर्ष सेवा करें। (इब्रानियों 13:17) अतः सावधानी से, उत्तरदायित्व निभाते हुए सहर्ष सेवा करें।

सदस्य अगुओं के अधीन रहें।

अगुवे सदस्यों की सेवा करते हैं तो सदस्य उनके अधीन रहें। आज अधीन रहने का अर्थ कुछ और समझा जाता है। प्रभु यीशु पिता परमेश्वर के अधीन था। अधीन का अर्थ बड़े–छोटे से नहीं है। यह अधिकार के दुरुपयोग के संदर्भ में नहीं है। कलीसिया में अधीन रहना कैसे दिखाई देता है? सदस्य अगुओं द्वारा सिखाए गए वचन का पालन करते हैं।

सदस्य मसीह यीशु के अधिकार में रहते हैं। वे प्रभु यीशु के अनुसरण के उत्तरदायी हैं और अन्त में वे शिक्षाओं और विवाद के विषय प्रभु यीशु को लेखा देंगे।

प्रेरितों के काम 6:1–5, "उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। तब

उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।" यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, और फिलिप्पुस, और प्रखुरुस, और नीकानोर, और तीमोन और परमिनास और अन्ताकियावासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।"

गलातियों 1:8–9, "परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो। जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो।"

कलीसिया के सदस्य अनुशासन के उत्तरदायी हैं।

मत्ती 18:15–20, "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा लिया। यदि वह न सुने, तो एक या दो जन को अपने साथ और ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से निश्चित की जाए।' यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले जैसा जान। "मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।"

अतः सदस्य वचन की शिक्षा ग्रहण करते हैं। वे अगुओं के विश्वास को अपनाते हैं और अगुओं का आनन्द बढ़ाते हैं। फिलिप्पियों और 1 थिस्सलुनीकियों में इसकी उचित चर्चा की गई है।

फिलिप्पियों 4:1, "इसलिये हे मेरे प्रिय भाइयो, जिनमें मेरा जी लगा रहता है जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयो, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।"

1 थिस्सलुनीकियों 2:19–20, "भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो।"

1 थिस्सलुनीकियों 3:6–8, "पर अभी तीमुथियुस ने, जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आया है, तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। इसलिये हे भाइयो, हम ने अपने सारे दुःख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।"

अतः कलीसिया के अगुओं और सदस्यों के मध्य सामंजस्य और मेल का अति सुन्दर चित्रण है। अगुवे सदस्यों की सेवा करते हैं और सदस्य मसीह के अधिकार में अगुओं के अधीन रहते हैं तो कलीसिया का विकास होता है और मसीह यीशु का महिमान्वन होता है।

कलीसिया किस ओर अग्रसर है?

कलीसिया का भविष्य

मसीह में विश्वास द्वारा अनुग्रह से परमेश्वर की महिमा और सेवा हेतु परमेश्वर द्वारा बुलाए गए मनुष्य प्रभु की विश्वासयोग्यता के विषय सीखें।

कलीसिया का भविष्य क्या है? मैं चार बातें कहकर समाप्त करूंगा। एक, हम प्रभु की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करें। हमने देखा है कि परमेश्वर अपनों पर सदैव अनुग्रहकारी है –पीढ़ी से पीढ़ी तक।

निर्गमन 34:6–7, में लिखा है, "यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, "यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करनेवाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करनेवाला है, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा; वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देनेवाला है।"

इफिसियों 1:3–6 में, "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया।"

परमेश्वर अपनों के लिए सदैव बहुत है। कठिनाइयों में भी उसने अपनी कलीसिया को उबारा है और संभाला है।

भजन 28:7–9, "यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूंगा। यहोवा अपनी प्रजा का बल है, वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है। हे यहोवा, अपनी प्रजा का उद्धार कर, और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे; और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।"

2 कुरिन्थियों 12:7–10, "इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊं, मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूंसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊं। इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूं; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं।"

उसके उद्देश्य सर्वोपरि रहेंगे।

यशायाह 46:9–11, "प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है; क्योंकि परमेश्वर मैं ही हूं, दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।' मैं पूर्व से एक उकाब पक्षी को अर्थात् दूर देश से अपनी युक्ति के पूरा करनेवाले

पुरुष को बुलाता हूं। मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूंगा; मैंने यह विचार बांधा है और उसे सफल भी करूंगा।"

रोमियों 8:28–30, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।"

परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होंगे और उसकी प्रतिज्ञाएं सच होंगी। हम परमेश्वर के जन, उसकी कलीसिया अपने प्रधान चरवाहे की विश्वासयोग्यता पर निर्भर करें। गिनती 23:19, "ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उस पूरा न करे?"

मत्ती 24:35, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।"

अपने अग्गजों से सीखें– विश्वास के नायकों से। (इब्रानियों 11) वे जानते थे कि उनके जीवन में परमेश्वर की बुलाहट उनके मन में अवस्थित परमेश्वर के अनुग्रह के कारण सुनाई दी थी। उत्पत्ति 12 में परमेश्वर के जनों का आरंभ हुआ जब परमेश्वर ने कसदियों के ऊर नगर से एक मूर्तिपूजक को बुलाकर उस पर अपना अनुग्रह उण्डेला।

उत्पत्ति 12:1–3, "यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपनी कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम महान् करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"

हम अज्ञात के भय से परिचित परिस्थिति छोड़ना नहीं चाहते हैं।

इब्रानियों 11:8, "विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूं, तौभी निकल गया।"

परमेश्वर के जन सांसारिक सुरक्षा एवं जानकार परिस्थितियों में नहीं लौटे थे। वे इस संसार में गोल सुराख में चौकोर खूंटे के समान थे। इब्रानियों 11:13, "ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं।"

कलीसिया भी इस संसार में परदेशी है। अतः हमारा जीवन इस संसार के सदृश्य न हो।

उन्होंने धीरज धरकर परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास रखा। उनके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की अपेक्षा कुछ भी नहीं था। वे विश्वास करते थे कि परमेश्वर असंभव को संभव बना देगा। अब्राहम और सारा को वृद्धावस्था लगभग 100 वर्ष की आयु में पुत्र प्राप्त हुआ था। उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर असंभव को संभव बना देता है। इब्रानियों 11:12, "इस कारण एक ही जन से, जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनित वंश उत्पन्न हुए।"

उनका जीवन यहां अर्थपूर्ण था क्योंकि उनकी आंखें स्वर्ग में लगी हुई थीं। कहा जाता है कि कुछ लोग ऐसे स्वार्गिक हैं कि पृथ्वी के लिए किसी काम के नहीं। यह सही नहीं है। यदि आपकी आंखें स्वर्ग में लगी हैं तो पृथ्वी पर आपके लिए महान परिवर्तन आता है।

इब्रानियों 11:13–16, "ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। जो ऐसी ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं कि स्वदेश की खोज में हैं। और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उस की सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था। पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं; इसी लिये परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है।"

कलीसिया! यह पृथ्वी हमारा निवासस्थान नहीं है। हमारा घर एक उत्तम नगर, स्वार्गिक देश है। हम यहां कुछ समय के लिए ही हैं।

हमें बड़े घर, सुविधाजनक मकान नहीं चाहिएं। हमारे विश्वास के नायकों के आमूल विश्वास ने उनसे आमूल आत्मत्याग करवाए। अब्राहम विश्वास ही से अपने पुत्र को बलि चढ़ाने चल पड़ा था। वे विश्वास में जीने के लिए जान देने को भी तैयार थे। इब्रानियों 11:39–40 मेरा प्रिय पद है। हम अपने अग्गजों से सीखें।

हम भावी कलीसिया के लिए जीएं कि सुसमाचार उन तक पहुंचे।

भजन 78:1–8, "हे मेरे लागो, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनों की ओर कान लगाओ! मैं अपना मुंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूंगा, जिन बातों को हम ने सुना, और जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है। उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगें, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्य और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगें। उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई, और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विषय उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी, कि तुम इन्हें अपने अपने बाल–बच्चों को बताना; कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्पन्न होनेवाले हैं, वे इन्हे जानें; और अपने अपने बाल–बच्चों से इनका बखान करने में उद्यत हों, जिससे वे परमेश्वर का भरोसा रखें, और परमेश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें; और अपने पितरों के समान न हों, क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और झगड़ालू थे, और उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था, और न उनकी आत्मा परमेश्वर की ओर सच्ची रही।"

थिस्सलुनीके की कलीसिया का चित्रणः

1 थिस्सलुनीकियों 1:2–10, "हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं। हे भाइयो, परमेश्वर के प्रिय लोगों, हम जानतें हैं कि तुम चुने हुए हो। क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन् सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है; जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे। तुम बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने। क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अखया में प्रभु का

वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवते और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु की, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।"

आइए हम वचन मनुष्यों में बांटें– सुसमाचार सुनाएं। वे वचन सुनेंगे और ग्रहण करेंगे। पौलुस थिस्सलुनीके नगर में प्रचार कर रहा था। उन्होंने वचन ग्रहण किया।

हम वचन सुनाएं और एक दूसरे के साथ मसीही जीवन का रूप बांटें।

1 थिस्सलुनीकियों 2:17–20, "हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिये, मन में नहीं वरन् प्रगट में तुम से अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया। इसलिये हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा। भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे? हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही हो। "

1 थिस्सलुनीकियों 3:6–8, "पर अभी तीमुथियुस ने, जो तुम्हारे पास से हमारे यहां आया है, तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो, और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। इसलिये हे भाइयो, हम ने अपने सारे दुःख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई। क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।"

हम वचन की शिक्षा दें और वे वचन का प्रसारण करें। थिस्सलुनीके की कलीसिया के लिए कहा जाता है कि वचन वहां से बाहर निकला। 2 तीमुथियुस 2:1–2, "इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा, और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

वचन को ग्रहण करके रुकें नहीं। उसका प्रसारण करें।

हम संसार के अन्त की लालसा करें।

संसार के अन्त से क्या अर्थ है? मैं भटक नहीं रहा हूं। देखिए मत्ती 24:14, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

कलीसिया के लिए परमेश्वर का उद्देश्य स्पष्ट है– प्रत्येक जाति में सुसमाचार सुनाओ। संसार में 11,000 जातियां हैं जिनमें से 6000 ने सुसमाचार नहीं सुना है। प्रभु यीशु हर एक जाति और भाषा के मनुष्यों के लिए मरा है। एक दिन वे सब उसके सिंहासन के समक्ष उपस्थित होंगे। कलीसिया इसी उद्देश्य के निमित्त जी रही है। हम वैश्विक कलीसिया को पूरा करना चाहते हैं।

परन्तु स्मरण रखें कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना कीमत मांगती है। मत्ती 24:14 के तुरन्त बाद प्रभु यीशु कहता है –मत्ती 24:9–13, "तब वे क्लेश देने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे, और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। तब बहुत से ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।"

प्रेरितों के काम 20:24 में पौलुस कहता है कि सुसमाचार प्रचार के अतिरिक्त उसके जीवन का कोई मूल्य नहीं है। विश्वासियों, आपका जीवन भी परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गवाही के अतिरिक्त किसी और काम का नहीं है। यह काम कीमत मांगता है। संसार में हमारे भाई–बहन जान दे रहे हैं। हम भी अपना जीवन न्यौछावर कर दें।

कलीसिया के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हो रही है। मत्ती 24:30–31, "तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।"

प्रभु अपनी कलीसिया के लिए आएगा। प्रकाशितवाक्य 1:7, "देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां। आमीन।"

हम उसके साथ राज करेंगे और सदा उसमें आनन्दित रहेंगे। प्रकाशितवाक्य 5:10, "और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।"

विश्वासियों हम इसी ओर अग्रसर हैं। हम उसका चेहरा देखेंगे और सब जातियों के विश्वासियों के साथ हम उसकी महिमा का आनन्द लेंगे तथा उसकी स्तुति करेंगे।

प्रकाशितवाक्य 22:1–12, "फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की एक नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति–जाति के लोग चंगे होते थे। फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे। वे उसका मुंह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे। फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें विश्वास के योग्य, और सत्य हैं। प्रभु ने, जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है, दिखाए।" "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं! धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।" मैं वही यूहन्ना हूं, जो ये बातें सुनता, और देखता था। जब मैं ने सुना और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे ये बातें दिखाता था, मैं उसके पांवों पर दण्डवत् करने के लिये गिर पड़ा। पर उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर; क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई भविष्यद्वक्ताओं, और इस पुस्तक की बातों के माननेवालों का संगी दास हूं। परमेश्वर ही को दण्डवत कर।" फिर उसने मुझ से कहा, "इस पुस्तक की भविष्यद्ववाणी की बातों को बन्द मत कर; क्योंकि समय निकट है। जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे।" "देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।"

कलीसिया को संजोएं, कलीसिया से प्रेम करें। कलीसिया को समर्पित हों। कलीसिया को जीवन अर्पित कर दें और एक दिन हम अनन्त प्रतिफल पाएंगे जो केवल कलीसिया के लिए है। हे प्रभु यीशु आ!